उन्मेष

(८)

श्रीश्रीमाँ द्वारा सत्संग – मकर संक्रान्ति (१४/१/२००९)

श्रीश्रीमाँ का वक्तव्य – (विषय - समदर्शिता)

सिद्ध महात्मा समदर्शी होते हैं। साधारणत: 'समदर्शी' का अर्थ साधारण लोगों की अपेक्षा महात्माओं की प्रकृति का भिन्न होना है। महात्मागण आत्मदृष्टि से विश्वजगत् के सकल प्राणियों के मध्य आत्म-चैतन्य के प्रकाश का दर्शन करते हैं; इसीलिए उन्हें 'समदर्शी' कहा जाता है। आत्मचेतना में सभी के मध्य इसीका प्रकाश अनुभूत होता है किन्तु कर्मभूमि पर जीवसत्ता में मनुष्य में चेतना अहंयुक्त रहने के कारण व्यक्तित्व एवं स्वभाव का तारतम्य देखा जाता है, तब 'समदृष्टि' या 'समदर्शिता' द्वारा कार्य का परिचालन नहीं हो सकता। मनुष्यों के अहंस्थित गुणों के द्वारा ही कोई भी कार्य निष्पन्न होता है; अर्थात कोई व्यक्ति जिस किसी कर्म में दक्षता प्राप्त करता है उसके द्वारा ही वह कर्म होना सम्भव है। जैसे - स्वामी विवेकानन्द ने जो कार्य किये हैं क्या वह किसी और के द्वारा करना सम्भव है? ठाकुर रामकृष्ण ने भी अपने इतनी सन्तानों में से नरेन को ही क्यों चुना? नरेन उस कार्य के लिए उपयुक्त थे इसीलिए ठाकुर ने नरेन को ही अपने सन्यासी पुत्रों के नेता के रूप में चुना। नरेन की अनुपस्थिति में 'श्रीमाँ' के अलावा और कोइ उपाय नहीं था। इसलिए श्रीमाँ ने ही बाद में निभृतभाव में नेतृत्व ग्रहण किया। भगवान तो करुणानिधान हैं, वे प्रकृत भक्त के लिए सदा ही समदृष्टि रखते हैं।

सत्व-रज-तम इन तीन गुणों के तारतम्य की विचित्रता से सत्ता का स्वभाव संगठित होता है। सत्ता के स्वभावानुयायी आधार में विभिन्न चेतना का स्फुरण होता है। इसीकारण आधार में सद्गुरु प्रदत्त बीज का विकास समस्त क्षेत्रों में समभाव में नहीं होता। सद्गुरु प्रत्येक आधार में समशक्तिपात से ही चैतन्य रूप से शक्ति का बीज निरुपण करते हैं परन्तु आधार की विचित्रता के कारण सद्गुरुप्रदत्त चैतन्यशक्ति समन्वित बीज का प्रकाश न्यूनाधिक देखा जाता है। साधन करते-करते त्रिगुण की समरस अवस्था आती है। यह समरस अवस्था तब होती है जब योगी की सकल प्रवृत्ति निवृत्त हो जाती है। ऐसा होने पर तीन गुणों की समता से सत्ता के स्वभाव में दिव्य संस्कार दिखाई पड़ते हैं, अर्थात् प्रर्वृत्ति निवृति होने पर ही तीन गुणों की समरस अवस्था होती है। साधक की सत्ता में तब सर्वव्यापी चेतना के विषयादि अपने-आप ही स्फुरित होना आरम्भ करते हैं। इस अवस्था में प्रत्येक साधक सद्गुरु की समदर्शिता का परिचय प्राप्त करते हैं एवं सद्गुरु की करुणा की उपलब्धि कर पाते हैं।

(श्रीश्रीमाँ सर्वाणी द्वारा रचित बंगला ग्रंथ 'उन्मेष' से उद्धृत)

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती सुशीला सेठिया